आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 13-01-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को ज्ञान और योग सिखलाकर मास्टर रचेता बनाने वाले, नई दुनिया के रचेता बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हें अपने योगबल से ही विकर्म विनाश कर पावन बन पावन दुनिया बनानी है, यही तुम्हारी सेवा है.

यह हम सब जानते है कि रचेता बाप इस संगमयुग पर आते है इस पुरानी तमोप्रधान दुनिया को सतोप्रधान बनाने, इस धरा पर सतयुग की स्थापना करने. इस कार्य के लिए डायरेक्टर बाप, सतयुग के आदि में आने वाली आत्माओं का सहारा लेते है. उन्हें राजयोग सिखलाते है और तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का रास्ता बतलाते हैं. जब यह पूज्य आत्मा ये अपने पुरुषार्थ से तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाती है तो फिर रचेता बाप उनके लिए सतोप्रधान दुनिया, सतयुग की स्थापना करते है. इसलिए रचेता बाप चाहते है कि जल्दी-जल्दी हम आत्मा ये बाप की श्रीमत् को फ़ोलो कर, योगबल से अपने विकर्मों विनाश कर पावन बन जायें. हम योगबल से अपने आप को पावन बनाते है वही रचेता बाप के लिए सबसे बड़ी सेवा है. क्योंकि जब सतयुग के शुरु में आने वाली सभी आत्मा ये सतोप्रधान-पावन बन जाती है यानी की सतयुग के लिए रेड़ी हो जाती है तब ही रचेता बाप इस कलियुग का विनाश करायें सतयुग की स्थापन करते हैं.

रचेता बाप की आज की मुरली से कुछ महा-वाक्यों को हमारी आत्मिक स्थिति बनाकर बाबा की याद में पढ़ेंगे.

- रचेता बाप ने कहा, भगवानुवाच. तुम्हें भगवान ने स्वयं आकर समझाया की भगवान तो निराकार है उनका कोई साकारी या आकारी रुप नहीं है. भगवान आये है तुम्हें इन वेश्यालय से निकाल शिवालय में ले जाने. सतयुग को ही शिवालय कहा जाता है. तुम सतयुग में दैवी-गुण वाले थे अब हो आसुरी गुण वाले. अब तुम फिर से शिवबाबा की याद से आसुरी से दैवी-गुण वाले बनते हो. शिवबाबा ही तुम्हें दैवी-गुणों वाला देवता बनाते हैं.

- रचेता बाप ने कहा, तुम बच्चे जानते हो इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही शिवबाबा ने आकर शिवालय स्थापन किया था. अब यह है पुरानी दुनिया, पतित तमोप्रधान. इसे ही बदलकर

सतोप्रधान दुनिया बनना है. वह बनती है तुम्हारे योगबल से. जितना तुम बाप से योग लगाकर अपने विकर्म विनाश करते हो, पवित्र बनते जाते हो. तो फिर तुम्हारे लिए दुनिया भी पावन, सतोप्रधान रचेता बाप बनाते हैं.

- रचेता बाप कहते है, मैं हूँ ही दुख हर्ता सुख कर्ता. मैं जानता हूँ तुम्हें इस रावण ने बहुत दुखी किया हैं. बाप आये है तुम्हें रावण के दुखों से निकाल शिवालय के सुखों में ले जाने. तुम बच्चों को सारे कल्प मे 3/4 सुख रहता हैं. वहाँ तुम लक्ष्मी-नारायण जैसा दैवी-देवता जाकर बनेंगे. बाप ही ज्ञान का सागर है, आकर तुम्हें कल्प के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देते हैं.

- रचेता बाप कहते है सतयुग में तुम्हीं सूर्यवंशी दैवी-देवतायें थे. इस पवित्र भारत भूमि पर ही सतयुग में सूर्यवंशी दैवी-देवताओं का राज्य था. यह सारी सृष्टि एक बड़े ड्रामा का स्टेज हैं जिस पर सब मनुष्य जीवात्मायें अपना-अपना पार्ट बजाते हैं. यह है बेहद की बात. यह बात तुम्हें बेहद का बाप ही आकर समझाते हैं.

- रचेता बाप ने ब्रह्मा के लिए भी तुम्हें समझाया हैं कि यह प्रजापिता ब्रह्मा है. अब निराकार बाप इसके तन में प्रवेश कर नई सतयुगी सृष्टि रचते हैं. अब तुम जानते हो पावन मनुष्य होते है सतयुग में. कलियुग में तो सब विकार से पैदा होते है इसलिए पतित कहा जाता हैं. वहाँ तो होता ही है योगबल. वहाँ है ही पवित्र राज्य, जो परमात्मा स्वयं स्थापित करते है. उस परमात्मा की ही महिमा है - सुख का सागर, पवित्रता का सागर....

- रचेता बाप तुम्हें कहते है इस दुखधाम को देखते भी भूल जाओ. बस यही याद हो, अभी हमको सम्पूर्ण बनकर शान्तिधाम जाना है. तुम्हारी आत्मा को स्मृति आई है कि हम बिन्दु आत्मा हैं. बाप भी बिन्दु है, निराकार हैं. तुम्हारी आत्मा ने ही 84 जन्म लिए हैं. अब बिन्दु बनकर बिन्दु बाप को याद करो तो बाप के पास घर में चले जायेंगे.

ॐ शांति.